भोज की नूतन कथासंक्षेपण–शैली
(चम्पूरामायण के सन्दर्भ में)

डॉ. रामहेत गौतम*

प्रचलित कई किंवदन्तियाँ और उपाधियाँ जिस कविबन्धु–कविराज की काव्यरसिकता का मूर्त प्रमाण प्रस्तुत करती हैं। वह कोई और नहीं, 11वी शती के परमार वंशीय धारा (वर्तमान में पश्चिमी म.प्र.के मालवा क्षेत्र का धार जिला) नरेश भोज ही हैं। भारतीय ज्ञान साधक नृप परम्परा में अग्रणी भोज विद्वान आश्रयदाता होने के साथ–साथ स्वयं भी विद्वान थे। भोज द्वितीय को विद्वत्ता के कारण ही अपने पूर्वज भोज से उपमित किया जाता है। वह विद्वान होने के साथ–साथ महान निर्माता, दार्शनिक, सर्वधर्म सम्पोषक, दानी भी थे। भोज का समय 11वी शती ई. (1018 से 1063 ई.) माना जाता है। उनकी कृतियाँ विषय वैविध्य के लिए विश्वविश्रुत हैं। उन्हें भारतीय संस्कृत का उन्नायक माना जाता है। कवि ने विपुल साहित्य रचा है। चम्पू साहित्य– रामायण चम्पू/भोज चम्पू, उपदेशात्मक साहित्य– चाणक्य माणिक्यम् (चाणक्य राजनीति शास्त्र के नाम से प्रकाशित।), कथा साहित्य– चारुचर्या, श्रंगारमंजरी कथा, शालिकथा, स्तोत्र साहित्य– महाकालिविजय, प्रकीर्ण साहित्य– अवनिकूर्मशतम्, सुभाषित प्रबंध, विद्याविनोद, राजमार्तण्ड–योगसूत्रवृत्ति, साहित्यशास्त्र– श्रंगारप्रकाश, सरस्वती कण्ठाभरण, चिकित्सा– आयुर्वेद सर्वस्व, ज्योतिष– राजमृगांक, धर्मशास्त्र– व्यवहार समुच्चय, व्याकरण– शब्दानुशासन, शिल्पशास्त्र– समरांगणसूत्रधार, कोष– नामतालिका,दर्शन–युक्तिकल्पतरु(शैवशास्त्र)। राजमार्तण्ड–योगसूत्रवृत्ति, सरस्वती कण्ठाभरण की विविध लिपियों व प्रान्तों में प्राप्त होने वाली अगणित प्रतियाँ, विभिन्न भारतीय ग्रन्थ संग्रहालयों में चम्पूरामायण की त्रिशताधिक हस्तलिखित प्रतियाँ भोज की लोकप्रियता का प्रमाण हैं। चम्पूरामायण पर अब तक सात से अधिक टीकाएँ लिखी जा चुकी हैं। आज भी टीका लेखन कार्य जारी है। आज उनकी साहित्य विद्या को शोध का विषय बनाया जा रहा है।

वाल्मीकि रामायण को आधार बनाकर स्वरुचि अनुसार कथानक परिवर्तित कर नूतनकलेवर प्रस्तुत करते हूए अनेक रूपक, महाकाव्य, खण्डकाव्य लिखे गये। वाल्मीकि रामायण के कथानक को रूपक स्वरूप प्रदान करने का मार्ग भास ने प्रशस्त किया। महाकाव्यविधा में प्रस्तुति का पथ महाकवि कालिदास ने ,तथा चम्पू विधा में प्रस्तुति का आरम्भ भोज ने किया। इससे पूर्व रामकथा का

***सहायक प्राध्यापक– संस्कृत, डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर म.प्र.**

गद्यकाव्यविधा को माध्यम नहीं बनाया गया था। अतः पद्य के साथ गद्य का मिश्रण कर रामकथा की उपजीव्यता के लिए एक अभिनव विधा का संचार अप्रतिम है। पद्यरूपी गीति के साथ गद्यरूपी वाद्य के सामंजस्य को अनूठी कल्पना के संचार से और अधिक सुखद व हृदयग्राही बना दिया। प्राचीन कथानक को नये आवरण में प्रस्तुत कर भोज ने लोक को चमत्कृत किया है। प्रौढ़ता और रमणीयता से यह कृति पश्चात्वर्ती रसिकों, कवियों के लिए प्रेरणास्रोत बन गयी। कादम्बरी की भाँति मूलकवि के हाथों पूर्णता न पा सकने वाली यह कृति बालकाण्ड से सुन्दरकाण्ड तक ही रह गयी। बाद में विविध कवियों द्वारा युद्धकाण्ड और उत्तरकाण्ड जोड़ गये। जिनमें लक्ष्मण कवि का युद्धकाण्ड, शंकराचार्य का उत्तरकाण्ड प्रसिद्ध हैं।

भोज ने रामायण के कथानक तथा पात्रों को मूल गुण–दोषों सहित प्रस्तुत किया है। रससिद्ध कृति रामायण के कथानक में परिवर्तन न कर काव्यशास्त्रीय आदर्श धर्म का यथोचित पालन करते हुए वाल्मीकि रामायण के आधिकारिक तथा प्रासंगिक कथानक को पताका–प्रकरी सहित बड़ी कुशलता से संक्षिप्त कर चम्पूरामायण में प्रस्तुत कर दिया है। वाल्मीकि रामायण के अनिवार्य अंग संवाद, आख्यानोपाख्यान, स्थान, ऋतुवर्णन आदि में से ऐसा कुछ भी नहीं बचा जो इसमें न आया हो।

कथानक अपरिवर्तित होते हुए भी चम्पूरामायण वाल्मीकि रामायण से उसी प्रकार भिन्न है जैसे उद्यान की उर्वर भूमि तथा जल से उगाया पुष्प, फल आदि भिन्न–भिन्न होते हैं। एक ही उपजीव्य से भिन्न–भिन्न कवियों द्वारा सृजित काव्य कवि के शब्दचयन प्रक्रिया एवं प्रयोग के संस्कार विशेष से अलग–अलग आस्वाद देने वाला होता है।

भोज ने चम्पूरामायण में वाल्मीकि के पुरुषोत्तम राम को पौराणिक प्रभाव से विष्णु अवतार के रूप में प्रस्तुत करते हुए वाल्मीकि रामायण के विशाल कथानक को नूतन संक्षेपण शैली से संक्षेप में यथावत् उपस्थित करते हुए लोकोपकार के लिए चम्पूरामायण की रचना की है। चम्पूशैली में अभिव्यक्ति की अभिरामता से यह कृति अभिनव बन गयी। जो भोज की कीर्ति एवं विद्वानों के आकर्षण (प्रीति) का केन्द्र बन गयी। यही कवि का प्रयोजन रहा है–

निर्दोषं गुणवत् काव्यं अलंकारैरलंकृतम्।
रसान्वितं कविः कुर्वन् कीर्तिं प्रीतिं च विन्दति।।[1]

पांचाली रीति का अबलम्बन, अलंकृत गद्य–पद्य की रमणीयता का समाहार चम्पूरामायण कविपथानुयायि सहृदयानुकीर्तन के लिए ही है।

तस्माद्ददधातु कविमार्गजुषां सुखाय।
चम्पूप्रबन्धरचनां रसना मदीया।।[2]

कवि भोजराज ने काव्यशास्त्रीय आदर्श अनुशासन का भी ध्यान रखा है। जैसा कि ध्वन्यालोक कार का कहना है कि–रामायण आदि रससिद्ध काव्यकृतियों के

कथानक में परिवर्तन तथा रसविरोधी स्वेच्छरचारिता न अपनायी जाय।

सन्ति सिद्धरसप्रख्या मे च रामायणादयः
कथाश्रया न तैर्योज्या स्वेच्छारसविरोधिनी।
तेषु हि कथाश्रमेषु तावत् स्वेच्छेव न योज्या
यदुक्तं कथामार्गं न चाल्पोऽप्यतिक्रमः।।[3]

रामायण के विराट ग्रन्थकलेवर को कथानक कसौटी के माध्यम से संक्षेप में प्रस्तुत करते हुए यथावत प्रवाह तथा प्रभाव वनाये रखना कवि की चतुराई का द्योतक है।

वाल्मीकि रामायण जैसी विशाल काव्य सरिता से ज्ञानाञ्जलि लेते हुए कवि भोजराज कहते हैं कि– रामायण गंगा के समान विशाल व पवित्र है तो चम्पूरामायण पितृतर्पण के लिए गंगा से भरी गयी जलाञ्जलि है। अतः चम्पूरामायण भी लोगों के लिए उतना ही पवित्र व कल्याणकारी है जितनी गंगा। अंतर तो आकार मात्र का है, गुणों का नहीं।

वाल्मीकिगीतरघुपुंगवकीर्तिलेशै
स्तृप्तिं करोमि कथमप्यधुना बुधानाम्।
गङ्गाजलैर्भुवि भगीरथयत्नलब्धैः
किंतर्पणं न विदधाति नरः पितृणाम्।।[4]

अर्थात् वाल्मीकि द्वारा वर्णित रघुश्रेष्ठ श्रीरामचन्द्र के संक्षिप्त चरित से कैसे भी हो चम्पूरामायण रचना से इस समय विद्वानों की तृप्ति करने जा रहा हूँ। भगीरथ के प्रयत्न से भूलोक पर लायी गयी गंगाजी के जल से मनुष्य अपने पूर्वजों का तर्पण नहीं किया करता, अर्थात् करता ही है।

'वाल्मीकिगीतरघुपुंगवकीर्तिलेशैस्तृप्तिं करोमि कथमप्यधुना बुधानाम्' जैसे वाक्यों से स्पष्ट होता है कि– कथासंक्षेप के लिए कवि ने कठोर परिश्रम व महान प्रयास किया है। फलस्वरूप कथासंक्षेप होने पर भी कथा की शुचिता तथा सुरुचिता बाधित नहीं हुई, साथ ही सुरुचिपूर्णशैली के साथ–साथ वाणी में आकर्षण व प्रभावोत्पादकता का उत्कृष्ट संचार हुआ है।

कथा संक्षेप करने हेतु कवि द्वारा अपनाये गये कुछ प्रमुख उपाय हैं–

अनावश्यक कथानक त्याग– जिनका होना या न होना कथा को ज्यादा प्रभावित नहीं करता ऐसे कथा तथ्यों का कवि ने त्याग किया है। जैसे चित्रकूट में वाल्मीकि से राम की भेंट का उल्लेख न करना।

प्रमुखाभिधानाभिव्यक्ति– अनेक अभिधानों में से प्रथम तथा प्रमुख को व्यक्त कर अन्य के लिए मौन हो जाना भी कवि का कथासंक्षेप का उपाय रहा है। जैसे– राक्षस–नाश पर्यन्त यज्ञपूर्णता के पश्चात् सीता स्वंयम्बर में जाते समय विश्वामित्र के मुख से राम को कौशिक की उत्पत्ति सुनाये जाते वृतान्त में ब्रह्मा

से उत्पन्न कुश नामक प्राचीन राजर्षि के चार पुत्रों **(कुशम्बं कुशनाभं च असूर्तरजसं वसुम्।**[5]**)** में से कुशम्ब का नाम लेकर शेष की सूचना दे दी जाती है। **कुशाम्बप्रमुखैश्चतुर्भिः**[6]

संकेतात्मक शैली– कवि ने रामायण के विस्तृत विवरण को अभिव्यक्ति की सामासिक शैली में संकेतात्मक रूप से प्रस्तुत किया है। जैसे वाल्मीकि रामायण के प्रथम सर्ग की सूचना चम्पूरामायण के आरम्भ में एक श्लोक में ही कर दी जाती है।

वाचां निशम्य भगवान् स तु नारदस्य,
प्राचेतसः प्रवचसां प्रथमः कवीनाम्।
माध्यांदिनाय नियमाय महर्षिसेव्यां,
पुण्यामवाप तमसां निहन्त्रीम्।।[7]

प्रकृष्ट रचना करने वाले कवियों में आद्यकवि भगवान वाल्मीकि, नारद का वचन सुनकर मध्याह्न बेला की स्नान संध्यादि क्रिया करने के लिए महर्षियों से सेवित, पावन अज्ञान विनाशिनी तमसा के तट पर पहुँचे।

रामायण के पांचवे सर्ग में वर्णित अयोध्या का परिचय चम्पूरामायण के एक श्लोक मात्र में कुश और लव के मुख से कहलवा देते हैं।

अस्ति प्रशस्ताजनलोचनानामानन्दसन्दायिषु कोसलेषु।
आज्ञासमुत्सारितदानवानां राज्ञामयोध्येति पुरी रघूणाम्।।[8]

अर्थात् अपनी समृद्धि से सकल जनों के नेत्रों को आनन्द प्रदान करने वाले उत्तर कोसल नामक जनपद में अपनी आज्ञा के द्वारा दानवों को खदेड़कर भगा देने वाले रघुवंशी राजाओं की अयोध्या नामक पुरी राजधानी है।

रामायण के छटवे–सातवे सर्ग में वर्णित राजा दशरथ तथा उनकी उपलब्धियों की सूचना भी चम्पूरामायणकार केवल एक श्लोक में देते हुए कहते हैं कि–

तामावसद्दशरथः सुरवन्दितेन
सक्रन्दनेन विहितासनसंविभागः।
वृन्दारकारिविजये सुरलोकलब्ध
मन्दारमाल्यमधुवासितवासभूमिः।।[9]

अर्थात् उस अयोध्यापुरी में राजा दशरथ ने चिरकाल तक वास किया। उन्हें देववन्द्य इन्द्र भी इन्द्रासन के आधे भाग पर वैठाता था। देवों के शत्रु दानवों को परास्त कर देवों से पारितोषिक में प्राप्त पारिजातपुष्पमालाओं के मकरन्द से उनकी भूमि सुरभित होती थी।

वाक्चातुर्य से विस्तृत वर्णन संकेत– बालमीकि रामायण अरण्यकाण्ड के 60 से 63 तक के चार सर्गों में सीताहरण पर रामविलाप को विस्तार से बचने के लिए कवि ने इत्थं (इस प्रकार) शब्द का प्रयोग करते हुए चम्पूरामायण के अरण्य

काण्ड के 36 से 40 तक के 5 श्लोकों में संक्षिप्त कर दिया हैं। जैसे–

इत्थं विलप्य दयितां विपिने विचिन्वन्
रामो न तत्र धृतिमान्नं च लक्ष्णोऽपि।
तादृग्विधामपि कथां कथयन् स्ववाचा,
वल्मीकजन्ममुनिरेव कठोरचेताः।।[10]

अर्थात् इसप्रकार विलाप कर प्रियतमा सीता को वन में ढूँढते हुए न राम धैर्य रख सके और न लक्ष्मण। इस प्रकार की कथा को अपनी वाणी में प्रकाशित करने वाले कठोर हृदय वाल्मीकि जी धैर्यवान हैं। अर्थात् हम जैसे सामान्य कवि उस कथा का प्रकाशन करने में नितान्त असमर्थ हैं।

ऐसा ही एक उदाहरण और दृष्टव्य है–

बहुभिरिह किमुक्तैस्त्यक्तसौमित्रिवृत्ति–
र्मुकुटमपि वहेयं युष्मदाज्ञा हि पूज्या।
मम परमवकाशः पर्णशालानुकूलः
क्वचिदपि विपुलायां नास्ति चेद्दण्डकायाम्।।[11]

अर्थात् उस विषय में आपको अधिक बताने की आवश्यकता नहीं है। अब मैने लक्ष्मण की तरह वनगमन की वृत्ति छोड़ दी, तो मुझे मुकुट धारण करना ही है। क्योंकि आप लोगों की आज्ञा का पालन ही मुझे करना चाहिए। किन्तु मुझे ऐसा तभी करना चाहिए जब विशाल दण्डकारण्य के एक कोने में पर्णशाला बनाने भर के लिए स्थान नहीं मिल पाता है।

कवि भोजराज ने बहुभिरिह किमुक्तेः जैसे शब्दों का प्रयोग– और अधिक क्या कहा जाये जैसे वाक्यांशों का प्रयोग कर अपनी वात कम शब्दों में सांकेतिक रूप से पूरी की है।

वाचामिदानीं किमु विस्तरेण लंकापुरी रावणबाहुगुप्ताम्।
काकुत्स्थदूतोऽयमुपेत्य चक्रे कृतान्तदूतस्य सुखप्रवेशाम्।।[12]

अर्थात् इस विषय में अधिक कहने से क्या लाभ? रावण की भुजाओं से सुरक्षित उस लंका पुरी में रामदूत हनुमान ने प्रवेश कर असंख्य राक्षसों के संहार से यमदूतों के लिए उसमें प्रवेश करना आसान बना दिया ।

अभिव्यक्ति की अनुपम शक्ति– कवि भोजराज में अभिव्यक्ति की अद्भुत शक्ति है। कथानक को आगे वढ़ाने के लिए कवि ने ललित गद्य का सहारा लिया है। वाल्मीकि रामायण के विस्तृत कथाभाग को संक्षेप में प्रस्तुत करने के लिए कवि श्लोकों के मध्य छोटे–छोटे ललित गद्यवाक्यों का प्रयोग करते हैं। जैसे कि वाल्मीकि रामायण बालकाण्ड का सम्पूर्ण चतुर्थ सर्ग एक गद्यवाक्य में समेट लेते हैं।

एतौ मुनिः परिगृह्य स्वां कृतिमपाठयत्। तौ पुनरितस्ततो गायमानौ दृष्ट्वा रामः प्रहृष्टमनाः स्वभवनमानीय भ्रातृभिः परिवृतो निजचरितं

गातुमन्वयुङ्क्त।[13]

भाव यह है कि उन दोनों (हमशक्ल, स्वरीले कण्ठ वाले गायक विद्वान युगल कुश–लव) को मुनि ने शिष्य के रूप में अपनाकर अपनी कृति पढ़ायी। इधर–उधर उन दोनों को गान करते देख कर प्रसन्न हृदय राम ने अपने भवन में बुलवाकर सभी भाइयों के सहित क्रम से रघुवीर चरित गाने के लिए कहा।

इसप्रकार कवि गद्य के माध्यम से घटनाओं की सूचना देते हुए कथानक को बड़ी सरलता से आगे बढ़ा देते हैं। यथा–

शम्बरासुर संग्राम में की गयी मदद से प्रसन्न होकर दिये गये दो वरदानों को याद दिलाते हुए राम राज्याभिषेक को रोकने के लिए विष खाकर प्राण देने की वात करती हुई कैकयी के वृत्तान्त को संक्षिप्त करने के लिए कवि भोजराज केवल एक गद्य वाक्य–**एवं वादिनीमेनां भूयोऽपि भूपतिरवदत्। (इस प्रकार कहती हुई कैकयी से राजा दशरथ ने फिर कहा।)**[14] कहकर कथा को आगे बढ़ा देते हैं।

इसप्रकार कथा का विस्तृत भाग कवि के काव्य कलाकौशल, भाषायी अधिकार, संक्षेपीकरण के लिए अव्यय एवं वाक्यांश प्रयोग, ललित गद्य प्रयोग, अनावश्यक कथा तथ्य त्याग के साथ–साथ सांकेतिक भाषा के प्रयोग से कथा संक्षिप्त होकर भी अविच्छिन्न एवं आकर्षक बन गयी है। चम्पूरामायण पाठक तथा स्रांता को अत्यन्त कम समय में सम्पूर्ण वाल्मीकि रामायण कथा रस को बहुत संक्षेप, सारगर्भित रूप में ज्ञानामृत पान कराती है। और वाल्मीकि रामायण गंगा में गोते लगाने के लिए लालायित करती है।

सन्दर्भः–

1. सरस्वतीकण्ठाभरणम् –1/2
2. राजाभोज का रचना चिश्व पृ.26
3. ध्वन्यालोक 3/14 वृत्ति
4. चम्पूरामायण बालकाण्ड– 4
5. वाल्मीकि रामायण बालकाण्ड 22/3
6. चम्पूरामायण पृ. 63 चौखम्बा अमरभारती प्रकाशन वाराणसी
7. चम्पूरामायण बालकाण्ड –5
8. चम्पूरामायण बालकाण्ड – 11
9. चम्पूरामायण बालकाण्ड 12
10. चम्पूरामायण अरण्य काण्ड 41
11. चम्पूरामायण अयोध्याकाण्ड 73
12. चम्पूरामायण सुन्दरकाण्ड 65
13. चम्पूरामायण बालकाण्ड श्लोक 10 के पूर्ववर्ती गद्य पृ.12
14. चम्पूरामायण अयोध्याकाण्ड पृ.136 श्लोक 20 के पूर्ववर्ती गद्य